(ख) भेदभाव करना स्वार्थी होना अपने को श्रेष्ठ समझना अहंकार करना दूसरों की वस्तुओं पर अपना अधिकार समझना लालची होना आदि।

अहिंसा का दूत

(क) बचपन मे पेड़ो पर चढ़ने का शौक था।

(ख) पिताजी को डर लगता कही मोहन पेड़ गिरकर चोट न लग जाए।

(ग) बड़े भाई ने पेड़ पर चढ़ते मोहन की टाँग - खींचकर जमीन पर गिरा दिया और थप्पड़ मारा

(घ) माँ ने मोहन से कहा वह भी जाके भाई को मारे इस बात से मोहन उदास हो गए।

खरीचे

तमाचा

शौक

गांधी

मोहनदास

एक दुनिया का रचें

(i) हम सभी धरती के ही बच्चे हैं। हम सब बराबर।

(ii) भेदभाव करना, कौन छोटा कौन बड़ा इनका कोई मिलब नहीं है।

(iii) हम प्यार भरी रचना चाहिए।

(iv) धरती मे रहने वाले सभी समान हैं। सभी मिलजुल प्रेम तथा एकता रचना चाहिए।

(क) एक दूसरे को भावनाओं को समझना मिलजुल रहना भेदभाव न करना। मिलजुलकर काम करना मधुर व्यवहार रखना ...

मोहन ने तमाचे का जवाब तमाचे नहीं दिया क्योंकि उनके भाई उनसे बड़े थे मारने वाले को रोकना चाहिए। किसी को मारना नहीं सिखाना नहीं चाहिए। हिंसा को बदला हिंसा से नहीं बल्कि अंहिसा से भी लिया जा सकते हैं।

जब मोहन बड़े भाई से थप्पड़ खाया तो वह रोकर माँ के शिकायत की ने कहाँ तू भी जाके उस थप्पड़ उसके गाल पे लगा दे। बड़ों के मारना नहीं चाहिए यह बात मोहन को कहाते छोटे से बालक से यह सुनकर माँ हरान हो गई।

(स)

(उ) प्रश्न का उत्तर छात्र अपने अनुभव के आधार पर लिखेंगे